कहानी

स्मार्ट दादी

डॉ प्रेमलता यदु

सुबह की पूजा, आरती, भजन और माला फेरने के बाद जब राजश्री देवी पूजा घर से बाहर हॉल में आई, तब तक घर के सभी सदस्य अपने-अपने गंतव्य के लिए घर से निकल चुके थे. गृह सहायिका जमुना किचन में काम कर रही थी.

राजश्री देवी ने घड़ी की ओर देखा तो सुबह के दस बज रहे थे. हर रोज सुबह का यह दृश्य होता है. जब तक राजश्री देवी अपनी पूजापाठ संपन्न करके फ्री होती, तब तक घर के सभी सदस्य घर से जा चुके होते हैं.

राजश्री देवी सोफे पर बैठ गई, तभी जमुना स्टील के बड़े से ग्लास में चाय लेकर आई और उनके सामने रखते हुए बोली - लीजिए अम्मा जी आपकी अदरक वाली गरमा-गरम चाय.

राजश्री देवी ने जमुना की ओर देखा, वह उससे कुछ कहती, इससे पहले ही जमुना बोल पड़ी - आपके लिए नाश्ता में क्या बना दूं अम्मा जी.

आज सब के लिए नाश्ता में क्या बना था... ?- राजश्री देवी ने जमुना के प्रश्न पर प्रश्न किया.

जमुना थोड़ा मुस्कुराई फिर बोली -

वही बना था अम्मा जी, जो आप खाती नहीं हैं पास्ता. आप कहें तो आपके लिए सूजी का हलवा, उपमा या पोहा बना दूं.

जमुना के ऐसा कहने पर राजश्री देवी थोड़ी देर सोचने के पश्चात बोली - नहीं आज रूटीन से थोड़ा हटकर खाने का मन है,चल आज समोसे बनाते हैं.

नाश्ते में समोसे सुनते ही जमुना का चेहरा लटक गया. उसका लटका हुआ चेहरा देख राजश्री देवी ने जमुना से पूछा क्यों क्या हुआ.... ?

उसने धीरे से जवाब दिया- अम्मा जी मुझे तो अच्छी तरह से समोसा बनाना आता ही नहीं है.

गर्म चाय का ग्लास अपने दोनों हथेलियों में दबा, चाय को फूंक मारती हुई राजश्री देवी बोली -

तुझे अच्छे से नहीं आता तो क्या हुआ. ? मुझे तो आता है, आज मैं तुझे समोसे बनाना सिखाऊंगी. तू जा कर आलू उबालने के लिए चढ़ा ,मैं चाय पी कर आती हूं. इतना कह राजश्री देवी चाय सुड़कने लगी और जमुना किचन की ओर चली गई.

राजश्री देवी को करीब एक महीने से ऊपर हो रहा है, यहां इस शहर में अपने बेटे निखिल के पास आए. जब से वे गांव से शहर आई हैं उन्हें यहां कुछ अधूरापन व खालीपन सा लगता है. गांव में कहने के लिए वह अकेले ही रहती थी लेकिन पूरा गांव उनका अपना घर था और गांव के सभी लोग परिवार के सदस्य. आते-जाते घर के सामने से गुजरने वाला हर छोटा-बड़ा व्यक्ति और बच्चा राजश्री देवी से थोड़ी देर ठहर कर बात करता, अभिवादन करता और फिर वहां से जाता. किसी के लिए राजश्री देवी बड़ी अम्मा थी तो किसी के लिए काकी और किसी के लिए दादी थी.

वहां गांव में राजश्री देवी की अपनी एक अलग ही खूबसूरत व व्यस्त दिनचर्या थी. जाड़े के दिनों में चाय की चुस्कियों के संग आस पड़ोस की महिलाएं मिलकर आंगन में तरह-तरह के बड़ी व पापड़ बनाती, रंग-बिरंगे ऊन के पहले गोले बनाती फिर खुबसूरत और नए-नए डिजाइन के शॉल व स्वेटर. जेठ के महीने में अलग-अलग तरह के अचार बनाए जाते फिर शाम को महफ़िल सजती जिसमें हंसी ठिठोलियां और गप्प चलते, साथ ही चलता क्रोशिया का काम. यही वजह थी कि पति के देहांत के बाद भी राजश्री देवी ने गांव नहीं छोड़ा था.

यहां शहर में आकर राजश्री देवी को अच्छा नहीं लग रहा था, वह अकेलापन व बोरियत महसूस कर रही थी, कारण यह था कि यहां राजश्री देवी को करने के लिए कुछ काम नही होता. घर पर हर काम के लिए नौकर थे. बेटा-बहू सुबह से ही दफ्तर के लिए जाते और देर रात घर लौटते. पोता-पोती भी स्कूल चले जाते और शाम तक लौटते, ऐसे में सारा दिन राजश्री देवी घर पर अकेली रहती, पूजापाठ के बाद उनके पास ना कोई बतियाने वाला होता और ना ही करने के लिए कुछ काम होता. बेटे-बहू की जिद और पोता नील जो कक्षा दसवीं का छात्र था और पोती नीलू जो बारहवीं क्लास में थी इन्हीं के मनुहार के चलते वह शहर आ तो गई थी परन्तु उनका मन यहां लग नहीं रहा था.

चाय पीने के बाद जब राजश्री देवी किचन में गई तो जमुना ने कुकर में आलू उबलने के लिए चढ़ा रखा था. राजश्री देवी को देखते ही जमुना बोली -

बताइए अम्मा जी समोसे बनाने के लिए और क्या सामान लगेगा . राजश्री देवी ने जमुना को समोसे बनाने की सारी सामग्री एक-एक कर निकालने को कहा फिर दोनों ने मिलकर समोसे और साथ में चटनी भी बना लिया. उसके बाद दोनों ने समोसे का लुत्फ उठाया, कुछ समोसे बिना तले फ्रिज में रख दिए ताकि जब सब घर लौटे तो उन्हें भी तल कर खिलाया जा सके.

शाम को जब स्कूल से नीलू और नील लौटे तो नाश्ते में समोसे और चटनी खा कर बहुत खुश हुए. राजश्री देवी के गले लगते हुए नीलू बोली - वाव... दादी आप तो नत्थू समोसे वाले से भी बहुत अच्छा समोसा बनाती हैं. खा कर मज़ा ही आ गया.

तभी नील एक और समोसा अपने प्लेट पर लेते हुए बोला - दादी आपको और क्या-क्या बनाना आता है... ?

राजश्री देवी मुस्कराती हुई बोली- बहुत कुछ बनाना आता है.

सचमुच दादी- नीलू और नील दोनों आश्चर्य से एक साथ बोले

सचमुच, कभी अपने पापा से पूछना राजश्री देवी हंसती हुई बोली.

दादी आप इतना सब कुछ बनाना जानती हैं तो आप अपना यू ट्यूब चैनल क्यों नहीं शुरू करती.- नील बोला

हां दादी आप अपना यू ट्यूब चैनल शुरू करिए , घर बैठे आप सबको बता सकती हैं सिखा सकती हैं कि कौन सी चीज कैसे बनाई जाती है. इससे आपका टाइम पास भी हो जाएगा और आप बोर भी नहीं होंगी- नीलू बोली

यू ट्यूब चैनल... ! यह क्या होता है - राजश्री देवी ने पूछा, उसके बाद नील और नीलू ने उन्हें विस्तार से समझाया कि यू ट्यूब चैनल क्या होता है. राजश्री देवी पूरी तरह से तो नहीं, पर बहुत कुछ समझ गई. उन्हें दोनों बच्चों की बात भी सही लगी लेकिन बात यहां पर आ कर अटक गई उनके पास तो एंड्रॉयड फोन ही नहीं है.

उसी रात राजश्री देवी ने अपने बेटे-बहू से अपना यू ट्यूब चैनल शुरू करने की बात कही और दूसरे ही दिन बहू ने राजश्री देवी के हाथों में एक नया फोन ला कर रख दिया, फिर शुरू हुई राजश्री देवी की डिजिटल यात्रा. उन्होंने स्मार्ट दादी के नाम से अपना यू ट्यूब चैनल शुरू कर लिया फिर व्हाट्स एप, फेसबुक, ट्वीटर और इंस्टाग्राम में खुद को प्रमोट करने लगी और कुछ ही महीनों में वे स्मार्ट दादी के नाम से वायरल हो गई.

साल भर बाद राजश्री देवी ने जमुना और उसके जैसी कुछ जरूरमंद महिलाओं को साथ लेकर तथा अपने ही गांव की कुछ होनहार महिलाओं के संग मिलकर स्मार्ट दादी के नाम से छोटा-सा गृह उद्योग भी शुरू कर लिया, जिसमें वे अचार, पापड़, बड़ी, क्रोशिया से बने सामान, मिट्टी, बांस और प्राकृतिक समानों से हाथ से बनी कलात्मक वस्तुएं ऑनलाइन और ऑफलाइन बेचने लगी, प्रदर्शनियां भी लगाने लगी. अब राजश्री देवी के पास काम ही काम था, वह सोशल मीडिया के साथ ही साथ वास्तविक जीवन में भी स्मार्ट दादी के नाम से जानी जाने लगी.

क्लास by बड़े भाई

मदद करने की आदत डालें

संदीप द्विवेदी
कवि/प्रेरक वक्ता/स्किल ट्रेनर

छोटे भाई, एक किस्सा सुनाता हूँ, मैंने कभी किसी से शायद स्कूल टाइम में सुना था.

किस्सा कुछ ऐसा था कि लगातार बारिश और तूफ़ानी हवाओं से गाँव को शहर से जोड़ने वाला पुल टूट गया और दुर्भाग्यवश उस गाँव के एक परिवार जिसके किसी सदस्य की अचानक तबियत खराब हो गयी. गाँव में कोई स्वास्थय सुविधा नही थी और उसे तुरंत अस्पताल ले जाने की ज़रुरत थी लेकिन पुल टूट जाने की वजह से अस्पताल ले जाना संभव नही था. रात और बारिश निकलने का नाम नही ले रही थी. वह जो घर में कर सकते थे बस वही कर रहे थे. तभी एक व्यक्ति ने दरवाजा खटखटाया. परिवार वालों ने आकर दरवाजा खोला ,वह व्यक्ति बारिश से भीगा हुआ था. वह इस बारिश और तूफ़ान से बचने के लिए रात भर की शरण मांगी लेकिन उन्होंने बिना कुछ कहे ही दरवाजा बंद कर दिया. उस व्यक्ति बाहर कहीं यहाँ वहां किसी पेड़ की आड़ में रात गुजारी. इधर अस्पताल न पहुंचा पाने की वजह से परिवार का वह बीमार सदस्य नही बच सका लेकिन वो बच सकता था अगर उनकी मदद करने की आदत होती क्योंकि उस रात जो व्यक्ति उनके यहाँ मदद मांगने आया था वो एक डॉक्टर था. जीवन भर यह स्मृति परिवार को पीड़ा देती रही.

छोटे भाई, जब हम किसी की मदद करते हैं तो हमारी मदद के भी रास्ते खुलते हैं. अगर हम किसी के लिए कुछ कर सकते हैं तो कर दें. बिना किसी अपेक्षा के. आप नहीं जानते कब कोई कहां क्या बनकर लौटे. मदद करने का अपना भी एक सुकून होता है. कभी किसी की यूं ही मदद करके देखिएगा. आपका वो क्षण और उसके बाद का पूरा दिन आप एक अलग आनंद से भरे होते हैं. मेरे दादाजी कहते थे कि मदद करना भगवान का और छीनना शैतान का काम होता है. तो क्यों न भगवान की आदत को अपनाने की आदत डालें. है कि नहीं..? तो बताइए, आज आप किसकी मदद करने वाले हैं.

लघुकथा

गलती

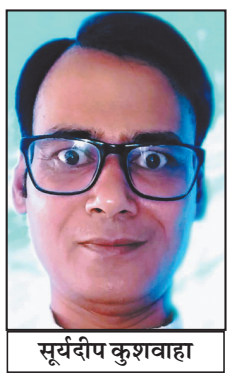

सूर्यदीप कुशवाहा

जब एक गांव में लेखपाल अतिवृष्टि से नष्ट हुए फसल का मुआयना करने पहुंचे तो सभी गाँव के लोग एक साथ वहां मौजूद थे. उन्होंने गांव वालों की ओर देखक र मृदु स्वर में कहा, 'आप सभी चिंता न करें? उनकी यह बात सुनकर गाँव वाले खुश हो गए. लेखपाल ने मुस्कुराकर कहा, 'तो क्यों न हम इसकी पुष्टि हर व्यक्ति के खेत में जाकर कर लें? उसी का नाम लिखूंगा, जिसके खेत में फसल खराब दिखेगी.'

गाँव वालों ने असमंजस भरी नजरों से लेखपाल को देखा. एक पढ़े-लिखे किसान ने कहा, 'अगर साहब आप कागज पर हमारा नाम नहीं लिखना चाहते तो कोई बात नहीं. मत दिलवाइए हमें मुआवजा. कब मिला ही है?

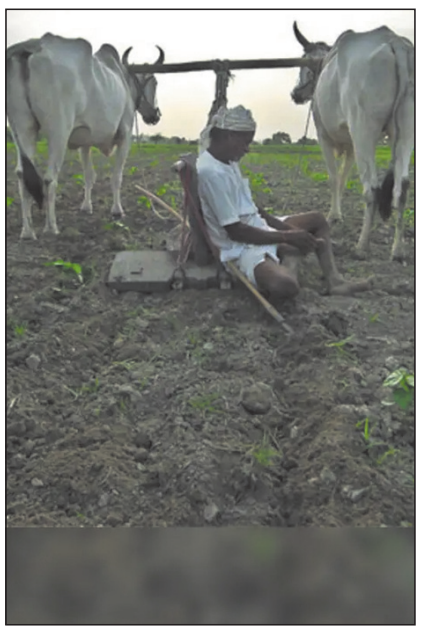

लेखपाल ने आश्चर्य जताते हुए कहा, 'तो आपको सच में अपना नाम नहीं लिखवाना है! फिर आपने खेतों का मुआयना करने से मना क्यों किया?'

भीड़ से एक दूसरा बूढ़ा आदमी आगे बढ़ा. वह शांत लेकिन दृढ़ स्वर में बोला, 'क्योंकि हमें आप पर विश्वास नहीं है.' लेखपाल चौंक गए, 'क्या मतलब?' बूढ़े की आंखें गीली हो गईं, 'आप लेखपाल लोग बस कोरम पूरा करके बरगलाकर जिसका घूस खाते हैं उन्हीं का नाम मुआवजा के लिए भेजते हैं, बाकि बेचारे लाचार पड़े रहते हैं. अब हम वही गलती इस बार नहीं करेंगे.'

आयोजन

तमिलनाडु में रचित हिन्दी साहित्य और अनूदित हिन्दी साहित्य हमें आपस में मिलाता है : ईश्वर करुण

तमिलनाडु

हिन्दी साहित्य अकादमी के महासचिव व राष्ट्रीय स्तर पर जाने-माने साहित्यकार ईश्वर करुण ने कहा कि तमिलनाडु के भौगोलिक परिवेश में रचित हिन्दी साहित्य और अनूदित हिन्दी साहित्य हमें आपस में मिलाता है. इस पर शोध की आवश्यकता है.

ललित नारायण मिथिला विश्वविद्यालय के स्नातकोत्तर हिन्दी विभाग द्वारा प्रो. उमेश कुमार की अध्यक्षता में आयोजित 'दक्षिण भारत का हिन्दी साहित्य' विषयक एकल व्याख्यान में श्री ईश्वर करुण ने दक्षिण भारतीय हिन्दी साहित्य और उत्तर भारतीय हिन्दी साहित्य के अंतर्संबंधों के विभिन्न पक्षों पर प्रकाश डालते हुए कहा कि साहित्य हमें आपस में मिलाता है.

इसका एक प्रत्यक्ष उदाहरण तमिलनाडु के पूर्व मुख्यमंत्री डॉ एम. करुणानिधि का राजनीति में पदार्पण है,जो हिन्दी विरोध से हुआ था. उसी मुख्यमंत्री ने बाद में कम्ब रामायण के संस्कृत अनुवाद का लोकार्पण किया था. साथ ही संतकवि तिरुवल्लुवर रचित तिरुक्कुरल का हिन्दी अनुवाद सरकारी खर्च पर करवाया. उस पर डॉ.एम करुणानिधि लिखित टीका कुरुलोवियम का हिन्दी अनुवाद

डॉ टी एस के कण्णन द्वारा किया गया. राजनीति की विडंबना देखिए कि उस अनुदित पुस्तक का लोकार्पण पटना में तत्कालीन मुख्यमंत्री से करवाया गया. यद्यपि यह कहना आवश्यक है कि प्राय: यह माना जाता है कि तमिलनाडु में केवल हिन्दी विरोध है. लेकिन मैं वहाँ पिछले लगभग चालीस वर्षों से हिन्दी की सेवा कर रहा हूँ. तमिल और हिन्दी के बीच एक सेतु के रूप में वहाँ के समाज ने मुझे सहर्ष स्वीकारा है. वहाँ इस बात का रोष रहता है कि दक्षिण भारत के हिन्दी साहित्य का हिन्दी साहित्य के इतिहास में अलग से उतना उल्लेख नहीं मिलता है,जितना मिलना चाहिए. इस पक्ष पर विचार करने की जरूरत है.

उन्होंने कहा कि बहुत सारी साहित्यिक कृतियों का कथानक दक्षिण के साहित्य से प्रभावित है. मिसाल के तौर पर अमृतलाल नागर कृत %सुहाग के नूपुर% वहाँ की लोकप्रिय रचना %सिलप्पदिकारम% से प्रेरित है. ऐसे बहुत से साहित्यकार हैं जिन्होंने उत्तर और दक्षिण भारत के साहित्य के बीच सेतु का काम किया है. इस श्रृंखला में डॉ एम. सुन्दरम जैसे विद्वान का जिक्र लाज़मी है, जिन्होंने दक्षिण में मीरा को तथा उत्तर में आंडाल को पहुँचाया.वहाँ के लोकप्रिय गीतकार व कवि वैरमुत्तू ने बहुत प्रयास करके अपनी कविताओं का हिन्दी अनुवाद प्रकाशित करवाया.उनकी कविताओं का अनुवाद करने का अवसर मुझे प्राप्त हुआ. उन्होंने आगे कहा कि दक्षिण भारत हिन्दी प्रचार सभा,जिसके संस्थापक राष्ट्रपिता महात्मा गाँधी थे,उसके आरंभिक हिन्दी प्रचारकों में सवार्धिक संख्या बिहार से थी. यह भी एक कड़ी है जो हमें दक्षिण के हिन्दी साहित्य से जोड़ती है. आज दक्षिण भारत हिन्दी प्रचार सभा में हिन्दी साहित्य में स्नातकोत्तर, एम. फिल, पी. एच -डी तथा डी. लिट करने की सुविधा उपलब्ध है. सभा के चार बड़े केंद्र दक्षिणी राज्यों में हैं. उन चारों अध्ययन केंद्रों का कामकाज विश्वविद्यालय के बराबर का है. दक्षिण भारत हिन्दी प्रचार सभा ने तमिल, तेलुगु, कन्नड़ तथा मलयालम साहित्य की पाँच क्लासिक रचनाओं का हिन्दी अनुवाद प्रकाशित करवाया है, जो दक्षिण भारत की साहित्यिक थाती को समझने के लिए उत्कृष्ट माध्यम हैं. व्याख्यान के अंत में उन्होंने कहा कि दक्षिणी हिन्दी साहित्य के अध्ययन को अपने पठन-पाठन में हमें शामिल करना चाहिए. इससे हमारा नजरिया विकसित होगा तथा साहित्यिक सामासिकता का विकास होगा. वहाँ के वैष्णव साहित्य, संगम साहित्य, आधुनिक साहित्य में ऐसा बहुत कुछ है जिससे हमारे ज्ञान में वृद्धि होगी.

कविता

आँसू

सुचिता सकुनिया

एक आँसू वही आँख के किनारे बैठा है
शायद वो भी इस उलझन में है कि
बह जाऊँ या फिर अंदर ही कहीं खो जाऊँ

अगर बह जाऊँ तो दुनिया कहेगी
कितना कमज़ोर दिल है इसका
ज़रा सी बात में आँसू निकल आते हैं

और अगर आँख में ही ठहर जाऊँ
तो किरकिरी बनकर चुभता रह जाता हूँ

एक आँसू आँख के उसी किनारे बैठा है

और अगर दिल में उतर जाऊँ
तो एक अजीब सी टीस बनकर कराहता हूँ

आखिर क्यों नहीं समझता ये समाज
कि ना रोने में भी एक अजीब सा दर्द होता है

एक आँसू पहले पलक के कोने तक आता है
फिर किनारे तक पहुँच जाता है
और जब बस बाहर आने ही वाला होता है
तो उसे समाज याद आ जाता है

साँस भींच कर जो आँसू हम पी जाते हैं
वही जिंदगी का बड़ा सबक सिखा जाते हैं
कहते हैं रोना कमज़ोरी है
पर सच यह है
अँसू सबसे मजबूत वही होते हैं
जो बह नहीं पाते

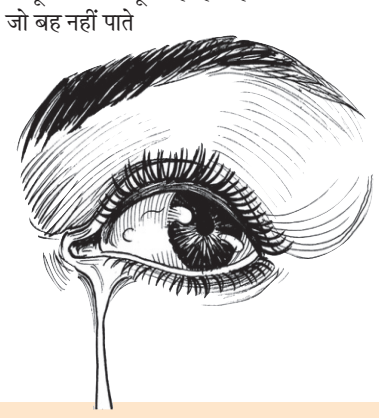

प्रेम प्रवाह के छन्दमय गद्य स्वर - 'और नदी लौट आई'

पुस्तक समीक्षा

डॉ नीलिमा रंजन

श्वेतवर्णा प्रकाशन, नोएडा से प्रकाशित सुन्दर मुखपृष्ठ, अठखेलियाँ करती नदी की लहरें और किनारे बैठे सुदर्शन नायक-सुंदरी नायिका उपन्यास 'और नदी लौट आई' एक झलक ही है. प्रेम और उसकी महीन अनुभूतियों से गूँथी गई यह कहानी जिज्ञासा पैदा कर आनंदित करती है, और निष्कर्ष की तलाश में व्याकुल भी.' जैकेट के पिछले पृष्ठ पर उपन्यास और जीवन का दर्शन और सनातन सत्य मानस की पंक्तियों से परिभाषित है-

'जेहि के जेहि पर सत्य सनेहू.
सो तेहि मिलहि, न कछु संदेहू..

संयोजन का एक नव प्रयोग है - उपन्यास के 'अंत में पाठकों से बातचीत' - उपन्यासकार का आत्म-कथ्य. आपका मानना है कि प्रेम का अनुभव और उसमें निहित भावनाओं का जैसे उद्वेग, हर्ष, विषाद, मधुरता आदि का सतत प्रवाह मानव को मानव बनाता है. सहज मानवीय अनुभूतियों को स्पर्शता यह उपन्यास जहाँ प्रणय पात्रों को पाने की ललक है वहीं उसकी प्रतीक्षा में

जीवन के अमूल्य क्षण, एक लंबा-बहुत लंबा समय, अनेक-अनेक वर्ष बिता देना नायक की चारित्रिक दुर्बलता नहीं अपितु उसके चरित्र की, हृदय की दृढ़ता भी रेखांकित करता है.

उपन्यास की कहानी के मुख्य पात्र हैं नायिका रुचिरा और उसका प्रेमी श्रीधर. नायक तो रुचिरा की स्मृतियों में है- उसकी बातें, उसके पत्र, उसकी कविताएँ - उपन्यास के उत्तरार्ध तक. हिंदी साहित्य की प्राध्यापक और लड़कियों के छात्रावास की अत्यंत लोकप्रिय अधीक्षक रुचिरा की सेवानिवृत्ति से प्रारंभ उपन्यास एक संतुलित, मुखर, स्नेहिल व्यक्तित्व की घर वापसी की बात करता है जहाँ रुचिरा प्रेम, करुणा और अपनेपन की कल्पना कर रही है. यह वापसी छोटे भाई की गृहस्थी में वापसी थी. माता-पिता की मृत्यु पश्चात वह ही भाई की अभिभावक, माता-पिता सब कुछ बन गई थी. सोच और यथार्थ के अंतर को बखूबी बताया गया है जब वह भाई के घर सदा के लिये आ जाती है. विदिशा लौटी तो ना घर, ना भाई उसका ना भाई का परिवार . रुचिरा के धन का आकांक्षी पूरा परिवार बस उसको ही वहाँ नहीं चाहता था. बार-बार नायिका पारिवारिक प्रेम की वांछा में तृषित हो आती जाती है और निराश हो जाती है, यहाँ तक कि उसे अपने ही पैसों से बने घर को छोड़ किराए का घर खोजने लगती है. जीवन एक मोड़ लेता है- छात्रावासी छात्राओं ने बारंबार भोपाल जाकर आयुक्त को आवेदन दे रुचिरा को तीन वर्ष का अतिरिक्त समय दे, एक्सटेंशन देकर- छात्राओं की जद्दि ने कमाल किया और एक्सटेंशन मिल ही गया. भाई, उसकी पत्नी, बच्चे सब प्रसन्न कि रुचिरा पुन: वही धनवृक्ष बन जाएगी जो नित नए बहानों से धन मिल सकेगा. बहुत गहन सोच-विचार के बाद वह अंतत: पुन: कार्य पर उपस्थिति दे देती है किंतु सब कुछ वैसा नहीं है. कहानी इन तीन वर्षों की समाप्ति तक है किंतु इस तह के नीचे चलता सतत प्रेम प्रवाह ही प्रेम का सातत्य, उपन्यास का नायक भी है. रुचिरा भयभीत है समाज, वय और परिवार से और प्रेम की ओर भूले से भी नहीं देखती बस हृदय आठों पहर उस में ही रत है. बरसों बाद दोनों का एक सगाई में मिल जाना उनके साथ पाठकों को भी रोमांचित कर देता है, यही है कमल की कहन शैली का कमाल .

विचारों का प्रवाह, कथोपकथन कालानुकूल हैं, कथावस्तु को बाँधे रखने का प्रयास प्रशंसनीय है. प्रेम कीक्ष भिन्न भिन्न परिभाषाएँ गढ़ी गई हैं जो भावों प्रकटीकरण के साथ भाषाशैली की समृद्धता का भी परिचायक हैं. नायिका का ऊहापोह-आत्म प्रलाप और नायक की अधीरता आसपास परिवेश में अनेकों बार नज़र आती है- यथार्थ के निकट.

' वह कब तक स्मृतियों में लौटती रहेगी? अब जब धीरे-धीरे उसके जीवन में उसका प्रथम और एकमात्र पुरुष लौट आया है तो उसे स्वीकारने में , उसकी सहधर्मिणी बनकर रहने में क्या बुराई है?' सुंदर अलंकृत किंतु पठनीय भाषा में लिखा यह प्रेम से पगा पद्यात्मक गद्य सा लगता है जैसे - 'मुंडी मटकाती, फुदकती इस छोटी सी नन्ही चिड़िया को देख रुचिरा को रंग, रोशनी और सुगंध का एहसास होने लगा था.' धिक्कार, करुणा, उपेक्षा और एकाकीपन से भरे आत्मीय संबंधों को नकारना कितना कठिन है- रुचिरा उसी का ज्वलंत उदाहरण है. एक विशुद्ध समीर के झकोरों सा उपन्यास, एक बार अवश्य पढ़िए .

और नदी लौट आई
डॉ. कमल चतुर्वेदी
श्वेत वर्णा प्रकाशन, नोयडा
नई दिल्ली
सेक्टर 93 नोयडा 201304

संपादकीय बोर्ड | प्रबंध संपादक : सुमीत माहेश्वरी, समूह संपादक : क्रांति चतुर्वेदी